1923A(and later)   My Dreams

Below: Fragments from the copy of Moodbidri pandulipis of Jai Dhavala scribed in Nagari. (Bottom) a note from Kakka about how he found these fragments in 1923.

ॐ नमः सिध्देभ्यः ॥ जयधवल सिध्दांत जीके मंगल श्लो-
क ॥१॥ जयइ धवलंगतेएणावूरियसयलभुवणभव-
णगणो। केवलणाणसरीरो अणंजणोणाम ओ चंदो॥१॥
तित्थयरा चउवीस वि केवलणाणेण दिट्ठसव्वट्ठा। पसियं-
तु सिवसरूवा तिहुवणसिरसेहरा मज्झं ॥२॥ सोजयइज-
स्स केवलणाणुज्जलदप्पणम्मि लोयालोयं। पुढपदिबिंबंदी
सइ वियसियसयवत्तगब्भगोउरो वीरो॥३॥ अंगंगवज्झणि-
म्मी अणाइमज्झंतणिम्मलंगाए। सुयदेवय अंबाए णमो-

सयाच्चक्खुमइयाए॥४॥गमह गुणरयणभरियं सुअणा-
णामियजलोहगहिरमपारं। गणहरदेवमहोवहिमणेयण
यभंगभंगितुंगतरंगं॥५॥ ॥ ॥ ॥
ॐ नमः सिध्देभ्यः॥ धवलसिध्दांतके मंगलाचरण श्लो-
क॥१॥ सिध्दमणंतमणिंदियमणुवममप्पुत्थसोक्ख-
मणवज्जं। केवलपहोहणिज्जियदुण्णयतिमिरं जिणंणम-
ह॥१॥ बारह अंगंगिज्जा वियलियमलमूढदंसणुत्तिल-
या। विविहवरचरणभूसा पसियउ सुयदेवया सइरं॥२

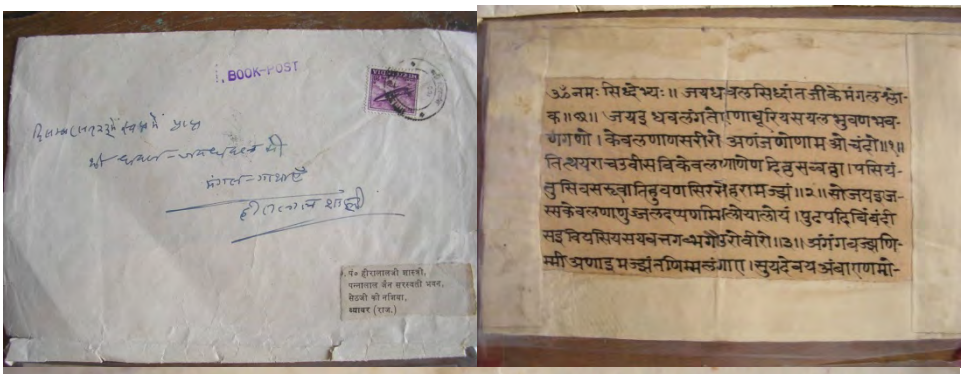

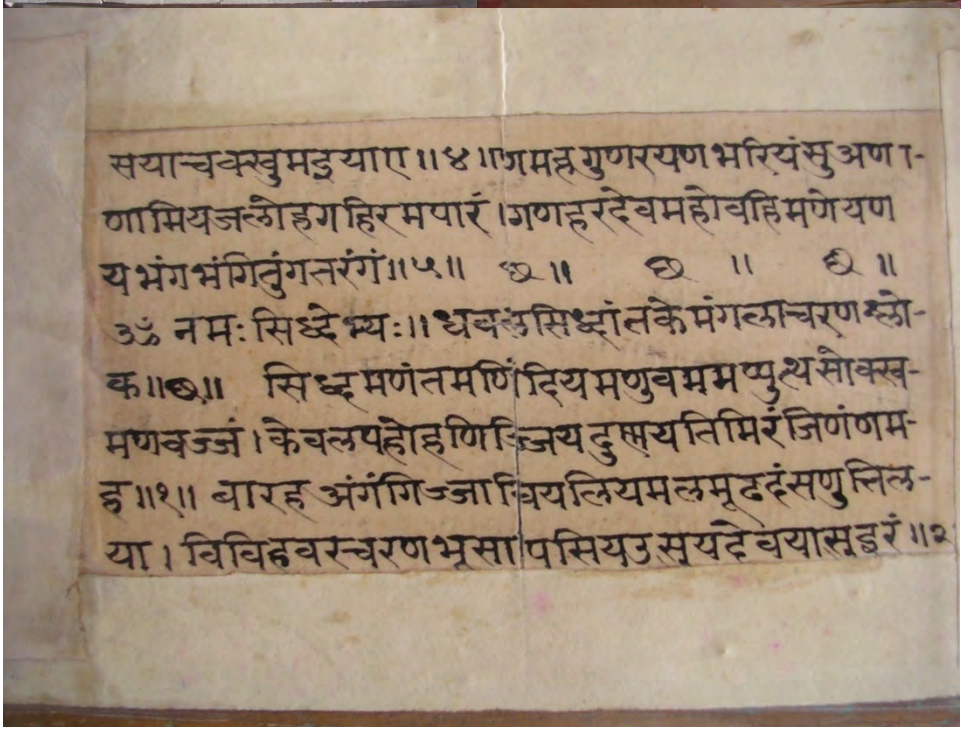

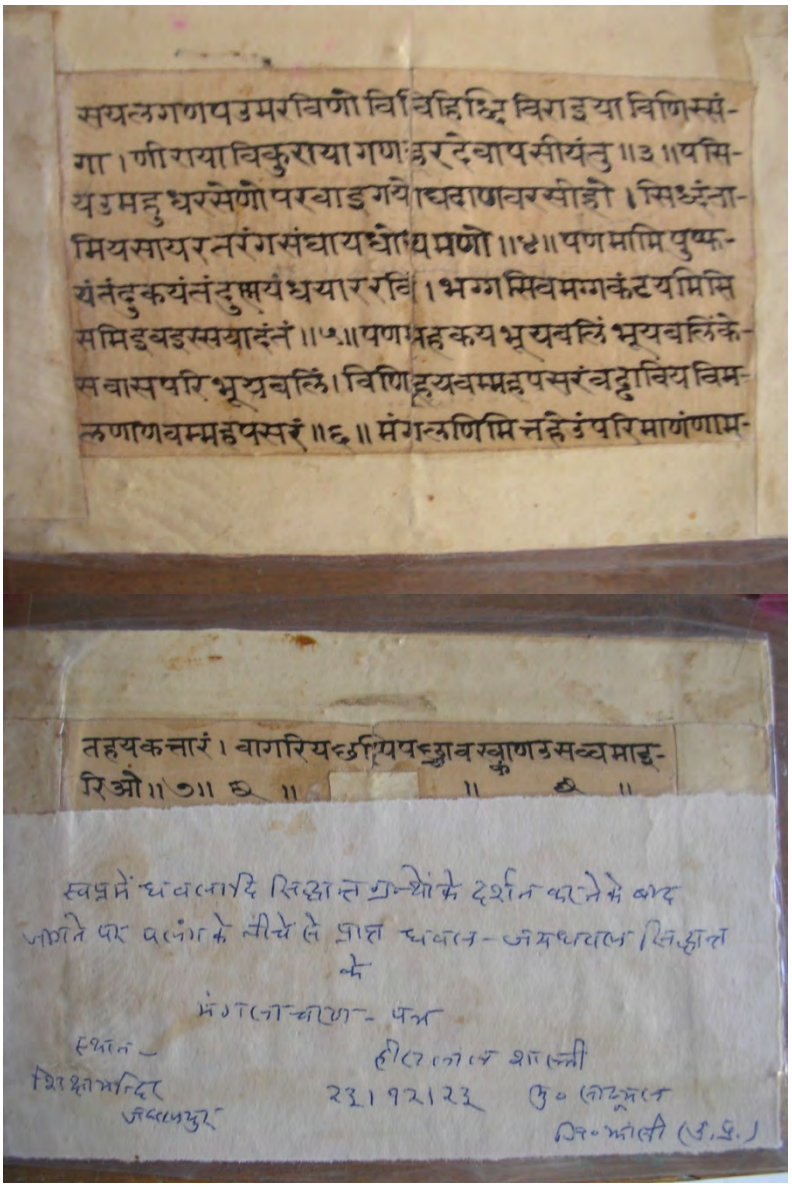

सयलगणपउमरविणो विविहिड्ढि विराइया विणिस्सं-
गा। णीराया विकुराया गणहरदेवा पसीयंतु ॥३॥ पसि-
यउ मह धरसेणो परवाइगयोघदाणवरसीहो। सिद्धंता-
मियसायरतरंगसंघायधोयमणो ॥४॥ पणमामि पुप्फ-
यंतं दुकयंतं दुन्नयंधयाररविं। भग्गसिवमग्गकंटयमिसि
समिइवइस्सया दंतं ॥५॥ पणमह कयभूयबलिं भूयबलिंके-
सवास परिभूयबलिं। विणिहयवम्महपसरं वड्ढाविय विम-
लणाणवम्महपसरं ॥६॥ मंगलणिमित्तहेउं परिमाणं णाम-

तह य कत्तारं। वागरिय छप्पि पच्छा वक्खाणउ सत्थमाइ-
रिओ ॥७॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

स्वप्न में धवलादि सिद्धान्त ग्रन्थों के दर्शन करने के बाद
जागने पर पलंग के नीचे से प्राप्त धवल-जयधवल सिद्धान्त
के
मंगलाचरण-पत्र

स्थान-
शिक्षामन्दिर
जबलपुर

हीरालाल शास्त्री
23।12।23 मु० साढूमल
जि० झांसी (उ.प्र.)

ता० ८-११-२८

स्थान बनारस - सन १९२४ कानकंकर, स्टो. प्र. नि.

स्वप्न — समय रात: ४ बजे

स्वप्न में देखा कि मझले भाई की तबियत बीमारी का तार आया. मैं रोता हुआ और जाकर उन्हें [illegible] करता हुआ हूं. सहसा विद्यालय की घंटी से नींद खुल गई।

स्वप्नफल —

इसी दिन रात के ११ बजे बीमारी का तार मिला. मैं तुरन्त बनारस से जलिबपुर से रवाना हुआ। पर घर पहुंचने पर देखा कि लोग उनकी अर्थी को लिए घाट से बाहर निकल रहे हैं।

विशेष - उक्त स्वप्न के आने के २ घंटे बाद ही मैंने मझले भाई को एक २ पेज का विस्तृत पत्र लिखा था. उसमें उक्त स्वप्न की स्पष्ट चर्चा कर दी गई थी और उन्होंने भी उत्तर दिया था। पर दुःख कि वह मेरे पहुंचने के बाद ही पहुंचा। आज वह पत्र मेरी डायरी में सुरक्षित है।

— ० —

दीपचंद [illegible]
२-१०-४५ रात; ४-१५

१

स्थान बोधा, सन १९३० . समय प्रातः काल ४ के लगभग

स्वप्न —

मैं रेलवे लाइन के किनारे पूर्व की ओर घूमने जा रहा हूं. अप-डाउन दोनों लाइनें हैं. मैं सिंगल लाइन पर से घूमने जा रहा हूं, उस पर उस वक्त कोई गाड़ी आने की संभावना नहीं है. आगे बढ़ने पर नदी का एक पुल आया. नदी में बाढ़ आई हुई है. मैं जिस वक्त बीच रेलवे पुल के बीच में जा रहा था. सामने से गाड़ी आती दिखाई दी. मैं यह सोचकर निश्चिन्त था कि दाहिनी बाजू की लाइन पर से रेलगाड़ी पास होगी. मगर क्या देखता हूं. कि वह बिल्कुल मेरी लाइन पर आ रही है और बड़े जोर से सीटी देती हुई मुझे सावधान कर रही है. एक क्षण में ही वह मेरे सामने आ पहुंची. मैंने अपना कोई बचाव न देख एकदम नदी में कूद पड़ा और तैर कर पार हो गया।

स्वप्न फल —

विद्यालय में [illegible] के रूप में झगड़ा. जिस उपाध्याय अध्यापक को मैं अपना सहायक समझता था. उनका एकदम मुझ पर भारी [illegible] आक्रमण करना. मेरा सावधान होकर एकदम नहीं दिखा पकड़ना और उस विपत्ति से छुटकारा पाना

— ० —

स्थान उज्जैन ता० २९-९-५५ समय ४ बजे के लगभग

स्वप्न —

मैं एक हरे-भरे जंगलमें घूमने जारहा हूं. अकस्मात् एक लम्बे-चौड़े शेरको ३-४ आदमी बांधकर उल्टा लेजारहे हैं. मैंने उसे छोड़नेके लिए प्रार्थना की. वे हंसते हुए आगे बढ़ गए. मैं अपने रास्ते आगे बढ़ा. किसी पहाड़की बड़ी २ चोटियां दिखाई दीं, बंदूकों-तोपोंकी आवाज सुनाई दी. आकाशमें छूटते आतिशबाजीके गोलोंकी रंगीली किरणें दिखीं, वातावरण शान्त होनेपर मैं वापिस लौटा. फिर हरा-भरा जंगल मिला. पहाड़ों मोरों को नाचते खेलते देखा और देखा कि कोई एक व्यक्ति उन मोरों को चुंबन-आलिंगन करता हुआ विचर रहा है। आगे बढ़ा, तो देखा कि पहले वाले स्थान पर ही बंधन-मुक्त, प्रसन्न चित्त, पूंछ उठाए और एक अगला पैर आगे को बढ़ाए वही सिंह (केसरी) खड़ा है.

स्वप्न-फल —

फल तो आगे मिलेगा. तो ज्ञात होगा. पर इन दिनों मैं सेठ लालचंदजी की बीमारी के समय किसी अनुष्ठानमें था. और मेरे समय पर भावना हुई थी. कि सेठ लालचंदजी की सब चिन्ताएं सब दूर होंगी।

कुछ दिनों के बाद जो फल मिला. उसे भी इसी ओर पढ़िये —

भा० मनोहरलालजी गेहूंसे भरा ट्रक ललितपुरसे सागर लेजाते हुए ~~कुछ~~ मोतीलाल रईया आदि ३-४ व्यक्तियों के द्वारा पुलिस से पकड़ा दिये गये. लम्बे समय तक मुकद्दमा चला. मुझे नौकरी छोड़कर मथुरा से आना पड़ा और २-३ साल तक ललितपुर, झांसी और प्रयागके कोर्टोंके चक्कर काटने और हजारों रुपयों का स्वाहा करने के बाद भा० मनोहरलालको दी गई छह मासकी सजा से छुटाया। तथा जिस मार्ग से मैं उन दिनों जा रहा था, उसे छोड़कर वापिस पुराने पठन-पाठनके कार्य पर वापिस आने के पश्चात ही पहले जैसे हरे-भरे दिनों को देख सका ।

स्थान जगाधरी प्रातः ५ बजे
फाल्गुण शुक्ला ११

ह. हीरालाल
८-३-६१

(३)

स्थान - मालिक भवन इन्दौर सन् [illegible] का अप्रैल समय प्रातः [illegible]

स्वप्न —

तेजबाई आपरेशन टेबल पर पड़ी हैं. मैं उनसे मिलने गया. अकस्मात् ~~बोली~~ उठी कि उनकी हीरा की अंगूठी गुम गई है. मैं अवाक् हो गया. जांच-पड़ताल व पूछ-ताछ पर भी न मिली. तो मैंने उपस्थित व्यक्तियों की खाना-तलाशी ली. न मिलने पर. कमरे की एक-एक वस्तु को उठाकर देखा. फिर भी न मिलने पर बुद्धि को दौड़ाया कि कहां पर वह अंगूठी होना चाहिए. अकस्मात् ख्याल हुआ - संभव है. आपरेशन की बेहोशी में हाथ के शिथिल हो जाने से अंगूठी निकल कर इस ओर टेबल की दराज में गिर गई हो - जिसमें कि खून-रुई वगैरह पड़े मिलते थे. एक लकड़ी से वह सब कचरा बाहर कर नीचे गिराया. तो चमकती हुई हीरे की अंगूठी मिल गई. धोकर वापिस तेजबाई के हाथ में पहना दी गई.

स्वप्न का फल —

मार्च सन् १९५४ से तेजबाई सख्त बीमार रहीं: २-३ बार आपरेशन करने पर भी हालत गिरती ही गई. अन्त में मैंने जीवन में पहली बार ~~[illegible]~~ २० साधिकों के साथ उनके आरोग्य लाभार्थ सिद्धचक्र विधान व जाप में शामिल होकर और दृढ़ प्रतिज्ञा के दूसरे दिन से ही तेजबाई की नाजुक [illegible] परिस्थिति होने लगी और अन्त में पूर्ण स्वास्थ्य लाभ किया ।

स्थान उज्जैन   सन १९४४ का मार्च

स्वप्न —

मैं अकेला फ्रीगंज की ओर घूमने जा रहा हूं. कुछ दूर जाने पर एक मोटा ताजा काला बैल अपनी ओर आता दिखाई दिया. मैं ज्योंही किनारा काट कर जाने लगा कि वह उधर ही मुड़कर सींगों से मारने के लिए झपटा। मैं २-१ बार इधर उधर हुआ पर वह मेरा पीछा करता रहा। तब विवश हो मैंने उसे अपने हाथ की लाठी से जोर के साथ उसके मुंह पर प्रहार किया और रास्ता पा मैं आगे चला गया। बाद मैं अमारोड की ओर घूमने गया, तो उधर भी अपर ओर एक काले सांड से मुठभेड़ हो गई. और उसने उसके साथ भी उपर्युक्त सलूक किया तब कहीं निर्विघ्न अपने घर आ सका।

फल —

इस स्वप्न देखने के थोड़े ही दिन बाद की घटना है मैं जैन बोर्डिंग में पं० दयाचंदजी से मिलने गया. अकस्मात वहां पं० [illegible] जी वैद्य आ धमके। रोकते हुए भी उन्होंने परवार मंडल की कटु चर्चा छेड़ ही दी. जिसके कारण मैंने उन्हें बहुत खरी खोटी सुनाई। दूसरे दिन विनोद मिल में ही चम्पालाल जी [illegible] से मोटरस्टैंड के बाजार में मुठभेड़ हो गई और मैंने उन्हें इक ही आड़े हाथों लिया कि उन्हें चुप हो जाना पड़ा। इसके ३-४ दिन के बाद ही परवार मंडल ने [illegible] बड़ी लड़ाई [illegible] मैं [illegible] मामले में निर्मल मिली। [illegible]

स्थान सागर   लगभग सन १९३९ के आसपास

स्वप्न —

मैं घूमते एक नीची ऊंची पहाड़ी पर जा रहा हूं. आगे एक पत्थर पर मैंने ज्योंही पैर रखा कि उसके नीचे से एक काले सांप ने निकल कर पैर पर ज्यों ही डसना चाहा कि मैंने उसके फन पर जूते की एड़ी का जोर से प्रहार किया. वह सांप घायल हो पत्थर के नीचे चला गया और मैं वापिस अपने घर चला गया।

फल — जिस स्थान अध्यापक पं० [illegible] के विश्वास पर मैं रह रहा था, उनका रहना आकस्मिक होना. मेरा जोर से ऊपर आक्षेप करना और मामला शान्त हो जाना।

स्थान अजमेर सन् १९३४-३५ की घटना -
स्वप्न में - आनासागर में कूद कर नहाना और
वापिस निकलना

स्वप्न

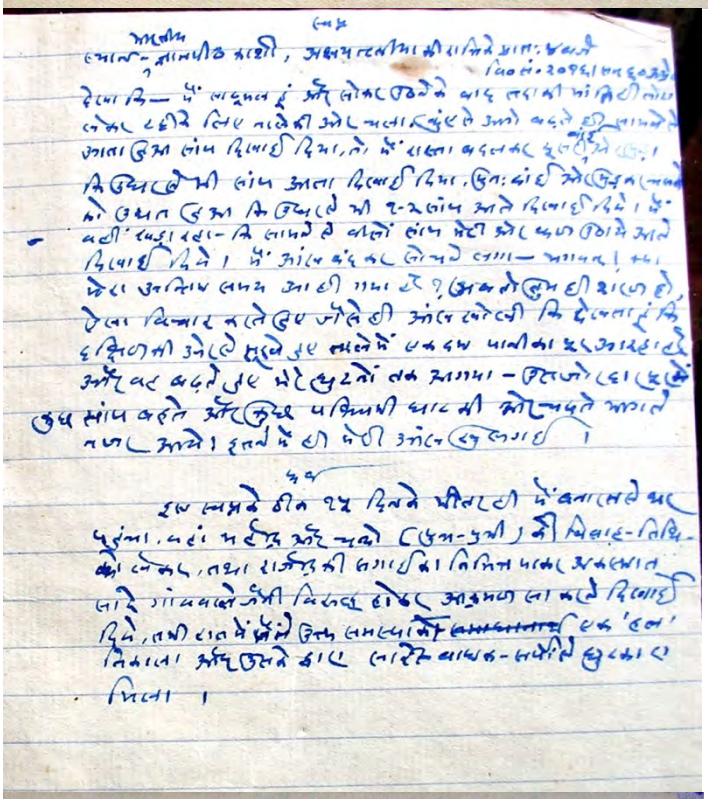

स्थान - ज्ञानपीठ काशी, अक्षयतृतीया की रात्रि के प्रातः ४ बजे
वि० सं० २०१६ ता० ...

देखा कि — मैं साहूजी हूं और सोकर उठने के बाद लघुशंका निवृत्ति लोटा लेकर टट्टी के लिए नाले की ओर चला। कुछ ही आगे बढ़ते ही सामने से आता हुआ सांप दिखाई दिया, तो मैं रास्ता बदलकर दूसरी ओर मुड़ा। कि उधर से भी सांप आता दिखाई दिया, पुनः दाईं ओर मुड़कर चलने को उद्यत हुआ कि उधर से भी २-२ सांप आते दिखाई दिये। मैं वहीं खड़ा रहा - कि सामने से बीसों सांप मेरी ओर फन उठाये आते दिखाई दिये। मैं आंख बंद कर सोचने लगा — भगवन्! क्या मेरा अन्तिम समय आ ही गया है? अब तो तुम ही शरण हो, ऐसा विचार करते हुए ज्यों ही आंख खोली कि देखता हूं कि दक्षिण की ओर से सूखे हुए नाले में एकदम पानी का पूर आ रहा है और वह बढ़ते हुए मेरे घुटनों तक आ गया - [illegible] कुछ सांप बहते और कुछ पश्चिम घाट की ओर चढ़ते भागते नजर आये। इतने में ही मेरी आंख खुल गई।

फल

इस स्वप्न के ठीक २५ दिन के भीतर ही मैं बनारस से घर पहुंचा, वहां महेन्द्र और चक्रो (पुत्र-पुत्री) की विवाह-विधि को लेकर, तथा राजेन्द्र की सगाई के निमित्त पाकर अकस्मात सारे गांववाले मेरे विरुद्ध होकर आक्रमण सा करते दिखाई दिये, तभी रात में मैंने उस समस्या का ~~…~~ एक 'हल' निकाला और उसके द्वारा सारे बाधक-सर्पों से छुटकारा मिला।

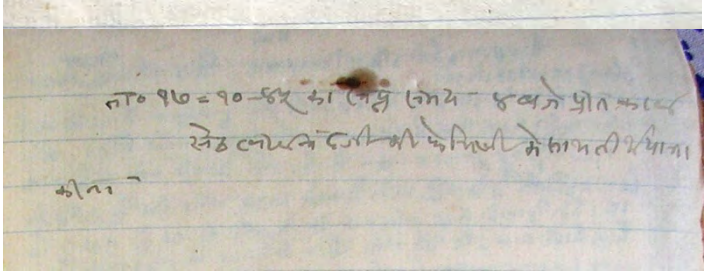

ता० १७-१०-६२ का स्वप्न समय ४ बजे प्रातः काल
सेठ लोकचन्द जी की फैक्ट्री में ... कीना

स्वप्न में —

साहूजी मैंने ही देखे हुए काले मगरों (गांववालों) को अपनी ओर आक्रमण करते हुए देखा। तब मैंने सिंहगर्जना के द्वारा ... से इधर-उधर भाग गये।